मनोज
कॉमिक्स
तिरंगे का कफन
राम-रहीम

तिरंगे का कफन
लेखक : महेन्द्र-संदीप
चित्रांकन : कदम स्टूडियो

राम - रहीम सीरिज

राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त – "भारती विद्या मंदिर" के प्रांगण में तिरंगे को फहराने के लिए उठे ही थे राजनगर के विधायक कुकासिंह...
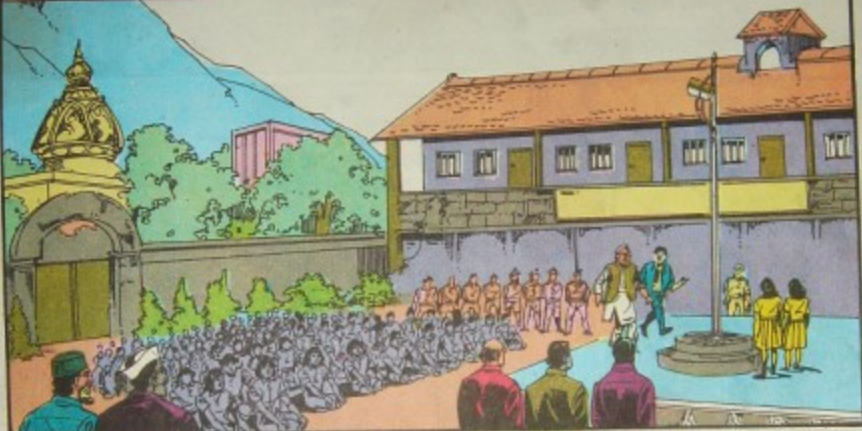
...कि एक तेज आवाज ने सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।
ठहर जा कुका! इस तिरंगे को तेरे नापाक हाथों से नहीं फहराने दूंगा मैं।

जहां के तहां थम गए कुकासिंह के कदम–
विलेन
हां कुका... बेगुनाहों के खून में होली खेलकर यहां देशप्रेम की दीवाली मना रहा है तू!

आज मैं तेरी लाश के ऊपर फहराऊंगा यह तिरंगा।
अचानक कृकासिंह के लिए फरिश्ता बनकर आया वहां राम।
अब यह कौन-सा नया ड्रामा शुरू किया है विलेन?
इससे पहले कि सचमुच कृकासिंह को दबोच लेता विलेन...
यह साला शुरू से ही ड्रामेबाज रहा है। शांतिपूर्वक बैठकर अपना जीवन व्यतीत करना शायद इसके खून में ही नहीं है।
लेकिन विलेन पर तो जैसे जुनून सवार था।
विलेन के आड़े मत आ राम। वरना मुझे यहां तीन लाशें बिछानी पड़ेंगी।
ओफ ओ! यह विलेन भइया हमेशा मार-धाड़ के मूड में ही क्यों रहते हैं।
श्वेता को स्कूल यूनीफार्म में देख आप समझ सकते हैं कि श्वेता इसी स्कूल में पढ़ती है। और 15 अगस्त के उपलक्ष्य में होने जा रहे एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में उसने भी हिस्सा लिया था। श्वेता के आग्रह पर राम-रहीम उसका प्रोग्राम देखने आए थे कि बीच में यह घटना घट गई।

पुरज़ोर कोशिश के बाद विलेन पर काबू पा चुके थे राम-रहीम।
बड़ी शान के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। सिर्फ फहराने वाले हाथ बदल गए थे।
विलेन की दहाड़ से गूंज उठी जेल की वह छोटी सी कोठरी–
अब क्या लेने आए हो राम?
यह जानने कि महीनों से सोया हुआ शेर एकाएक कैसे जाग पड़ा।
मुझे झण्डारोहण के पश्चात जेल में विलेन से मिलकर उसकी इस अप्रत्याशित हरकत का कारण जानना होगा।
यह शेर एकाएक नहीं जागा है राम। इसे चन्दामामा की डायरी ने पुनः जगाया है। जो एकाएक कल एक शराबी के द्वारा मेरे हाथ लग गई।

मुफ्त में पैसे नहीं मांग रहा हूं। हिच्च... बदले में यह डायरी दूंगा। जो शहर के बाहर स्थित खण्डहर के तहखाने के एक आले में मुझे तब पड़ी मिली थी, जब मैं पुलिस से छुपकर उस तहखाने में गला तर कर रहा था।

मैं बाज की तरह उस डायरी पर लपका। निःसंदेह वह चन्दामामा की डायरी थी। मैंने उस डायरी का एक-एक लफ्ज पढ़ा।

और जब तुम चन्दामामा की कहानी पढ़ोगे तो तुम भी मेरी तरह खून के आंसू रोने पर मजबूर हो जाओगे राम।
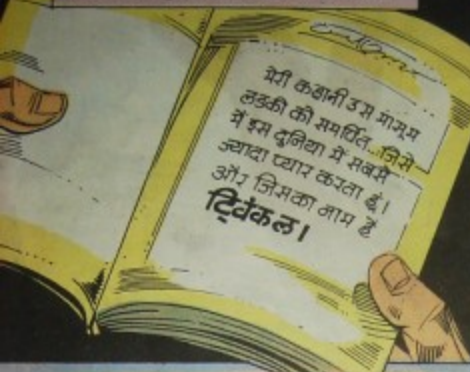
डायरी का पहला पन्ना खोला राय ने –
मेरी कहानी उस मासूम लड़की की समर्पित...जिसे मैं इस दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करता हूं। और जिसका नाम है
ट्विंकल।
चम्बल के बीहड़ों में न जाने कैसी हवा बहती है, जिसने आज तक अनगिनत डाकुओं को जन्म दिया है।
न जाने कैसा है चम्बल का पानी, जिसे पीकर आदमी की रगों में बहता लहू उबाल खाने लगता है।
इसी चम्बल की माटी पर अत्याचार व जुल्म को कुचल डालने के लिए एक बन्दूक उठी थी। और वह बन्दूक उठाई थी चन्दा डाकू ने।
कसम है मां भैरवी की। लगान न चुका पाने पर जिस ठाकुर शमशेरसिंह ने मेरे मां-बाप को जिंदा भून डाला। उसके रक्त से मां भैरवी के मस्तक पर तिलक करुंगा आज।
अपना कहा पूरा कर दिखाया था उस चम्बल के शेर ने –
जय मां भैरवी!
तभी कुलांचे भरता हुआ आया था वह डाकू –
सरदार... गजब हो गया सरदार। न जाने कैसे पुलिस को ठाकुर की हत्या की खबर हो गई। वह इस मंदिर को घेरने आ रही है।

ओह! जहां तक हो सके बिना खूनखराबा किए पुलिस से बच निकलो। हमारा लक्ष्य ठाकुर जैसे कानून के मुजरिम हैं न कि पुलिस जैसे कानून के रक्षक।

लेकिन पुलिस बल कहां समझ पाया था चन्दा डाकू के जज्बातों को।
आत्म-समर्पण कर दो चन्दा।

किसी तरह अपने आपको घोड़े की आड़ में छुपाकर वह पुलिस का घेरा तोड़कर भागने में कामयाब रहा।
इस मुठभेड़ में चन्दा के कई साथी मारे गए थे।

अंधेरे में डूबा "टिकरी गांव"। चहुंओर छाए सन्नाटे को भंग किया था दरवाजे पर हुई खटखटाहट की आवाज ने।
खट्...खट
कौन आया होगा इस वक्त?

दरवाजा खोलते ही घुटी-घुटी सी चीख निकली थी उस स्त्री के मुंह से।
डरो नहीं बहन! मेरी बांह में गोली लगी है। मुझे पुलिस से बचने के लिए आज रात यहां बसेरा कर लेने दो।
बहन कहा है, तो सुनो। बहन के आगे भाई गिड़-गिड़ाया नहीं करते।

बांह से गोली निकलने के पश्चात अब आराम महसूस कर रहा था चन्दा डाकू -
मेरा नाम गंगा है। और यह मेरा एकमात्र सहारा मेरी बेटी ट्विंकल।
और आपके पति?
कानून की राह पर चलते-चलते एक माह पहले किसी डाकू की गोलियों से छलनी हो गए। यह है मेरे पति की तस्वीर।

तस्वीर पर निगाह पड़ते ही बिजली सी गिरी थी चन्दा डाकू पर-
इंस्पेक्टर धर्मेन्द्र श्रीवास्तव!
आप इन्हें कैसे जानते हैं?
ब... बस यूं ही। अरे ट्विंकल, अपने चन्दामामा के पास नहीं आएगी?
लेकिन चन्दामामा तो आसमान में रहता है। क्या तुम आसमान से आए हो?

हां ट्विंकल, सिर्फ तुमसे मिलने। क्योंकि मैं तुम्हें आसमान से रोजाना देखा करता था। और तुम मुझे इस धरती की सबसे सुन्दर लड़की लगी।
अब तुम मुझसे रोज मिलने आना चन्दामामा और आसमान से मेरे लिए ढेर सारी चॉकलेट्स व खिलौने लाना। साथ ही मेरे पापा को भी...

...मम्मी कहती है कि मेरे पापा आसमान में आपसे मिलने गए हैं। क्या यह सच है चन्दामामा?

छलछला आईं थीं चन्दामामा की आंखें ट्विंकल की वह मासूम-मासूम बातें सुनकर -

तुझे कैसे बताऊं ट्विंकल, कि जो गोली तेरे पिता के सीने में लगी थी वह चन्दा डाकू की बन्दूक से निकली थी।

मुश्किल से पचास घरों की आबादी वाला गांव था टिकरी। चहुं ओर बीहड़ों से घिरा हुआ था, इसलिए सरकार ने पास ही एक थाना स्थापित कर वहां पुलिस बल समेत धर्मेन्द्र श्रीवास्तव को नियुक्त किया था।

यह सच है भाई जी, चन्दा डाकू का पिछले कुछ दिनों से इंस्पेक्टर की बीवी के घर आना-जाना हो रहा है।
सुनकर चमक उठी थीं ठाकुर ज्वालासिंह की आंखें।
यह खेल चलने दो कूका। चन्दा पर हाथ डालने के लिए हमें उचित मौके का इन्तजार करना होगा।
जिद कर उठी थी वह नन्हीं गुड़िया-
नहीं चन्दामामा। अभी हम थोड़ी देर और घोड़े की सवारी करना चाहेंगे।
नहीं टिंकल... शाम हो रही है...
...और आज शाम को आसमान में मेरी सभी देवताओं के साथ एक जरूरी मीटिंग है। अगर मैं शीघ्र वहां न पहुंचा तो सभी देवता नाराज होकर मुझे आसमान में नहीं निकलने देंगे।
बेचारी भोली टिंकल, चन्दामामा की ऊट-पटांग बातों में आ गई।
अगले क्षण वह, गांव की तरफ दौड़ पड़ी थी।
अरे हां... अपनी मां से कहना कि मैं रक्षाबंधन के दिन आ रहा हूं।
कह दूंगी चन्दामामा।
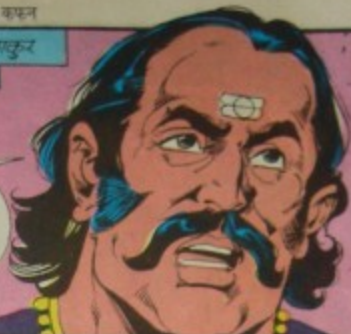
खुशी के मारे एक-एक नस फड़क रही थी ठाकुर ज्वालासिंह की!
राखी के दिन चन्दा अपने घोड़े पर आएगा जरूर, लेकिन आएगा अर्थी पर! हा...हा...हा...
राखी-भाई-बहन के पवित्र प्रेम का त्यौहार-
आज मैं गंगा को बता दूंगा कि धर्मेन्द्र श्रीवास्तव का हत्यारा मैं हूं!
तभी हवा के झोंके सी अन्दर आई टिंवकल-
मामा... पुलिस...पुलिस... आ रही है!
???
पुलिस!
हा...हा...हा... और यह पुलिस मैंने बुलाई है चन्दा। ताकि आज अपनी बहन का सुहाग उजाड़ने वाले की सांसें उखाड़ सकूं मैं।

तेरी मौत के बाद मैं पुलिस को आराम से बता दूंगा कि तूने एकाएक मुझ पर हमला किया था। इसीलिए मुझे अपनी आत्मरक्षा के लिए तुझे गोली मारनी पड़ी।
धांय
चन्दा के आगे चट्टान बनकर आ खड़ी हुई थी गंगा!
धांय
आऽऽऽ
गंगा... यह तूने क्या किया बहन।
आज रक्षाबन्धन के दिन अपनी बहन को वचन दो भइया कि तुम ज्वालासिंह को मारकर पुलिस के आगे आत्म-समर्पण कर दोगे। ताकि तुम्हारी गोली से मरे मेरे पति की आत्मा को शांति मिल सके।
एक पल के लिए किसी बिच्छू काटे सा उछला था चन्दा!
हां भइया, जब तुम मेरे पति की तस्वीर देखकर चौंके थे, तभी मैं समझ गई थी कि तुम्हीं मेरे पति के हत्यारे हो। लेकिन तुमने मुझे बहन कहा था इसलिए मैं चुप रही। आह...!
गंगा की मौत ने चन्दा को पागल बना डाला था!
यह ले ठाकुर!
आऽऽऽऽ
99

ठाकुर की हवेली को आग की लपटों में झोंककर किसी तरह पुलिस से बचते हुए भाग निकला चन्दा।
काश! कुका भी मेरे हाथ लग गया होता।
लेकिन अभी चन्दा की मुसीबतों का सिलसिला खत्म कहाँ हुआ था।
मामा...!
हिन...न...नऽऽऽऽ
किसी गेंद की भांति लुढ़कती चली जा रही थी ट्विंकल उस सीधे पहाड़ी ढलान पर।
ट्विंकल
मामा... मामा...!
पगलाया सा देखता रह गया उसका चन्दामामा।
ट्विंकल...ट्विंकल... जवाब दे मेरी बच्ची! कहाँ है तू?
किन्तु चन्दा की आवाज बीहड़ों में
ट्विंकल को खोने के पश्चात् मैंने अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया। पन्द्रह साल बाद जेल में बैठकर यह डायरी लिख रहा हूँ। जानता हूँ कि कुछ ही दिनों बाद सरकार मुझे रिहा करने वाली है। सबसे पहले जेल से बाहर निकलकर "विलेन" नामक एक ताकत को दुनिया के सामने लाऊंगा।

फिर उसी ताकत से कुकासिंह को खत्म करवा-ऊँगा। जो हवेली में आग लगते ही कहीं भाग गया था। अब मुझ में पहले जैसी ताकत नहीं रही। मुझे तमाम उम्र एक ही बात का अफसोस रहेगा कि दिवकेल को खोजने में नाकामयाब रहा उसका-
चन्दामामा
डायरी बन्द कर आंसुओं से तरबतर चेहरा ऊपर उठाया राम ने-
तो इसलिए विलेन कुकासिंह को मार डालना चाहता था। ताकि चन्दामामा की आखिरी इच्छा पूर्ण हो सके।
विलेन पर इस समय खून सवार है राम। कहीं वो कुकासिंह तक पहुंचने के लिए जेल में कुछ गड़बड़ न कर दे।
हमें फौरन जेल पहुंचकर विलेन को छुड़ाना होगा।
जेल के समस्त कैदी मुर्दों से शर्त लगाए सो रहे थे। किन्तु विलेन की आंखों में नींद न थी।
आह... यह मेरे सीने में अचानक दर्द क्यों उठने लगा।
असहनीय पीड़ा से अब डे कर गए आखिर के।

और न चाहते हुए भी होंठों से चीख निकल ही गई।

आऽऽऽऽऽ

इस चीख ने संतरियों का ध्यान आकृष्ट किया, कोठरी की ओर-

अरे! क्या हुआ उसे?

आह... सीने में दर्द! प...पानी!

लगता है, हार्ट अटैक हुआ है। फौरन जेलर साहब को सूचित करो।

और बस, अगले क्षण वह हरकत कर ही गया लड़का, जिसकी दोनों संतरियों ने स्वप्न में भी आशा न की थी।

धड़ाक

इतनी रात गए अच्छे बच्चे चुपचाप सो जाया करते हैं...

धड़ाक

आंधी-तूफान सा बाहर भागा विलेन।
न चाहते हुए भी राह में बाधक बने दो संतरियों को मौत के घाट उतारना पड़ गया 'विलेन' को।
धांय
धांय
जैसे ही वह जेल से बाहर निकला–
रुक जाओ विलेन!
किन्तु विलेन से पहले हरकत में आया 'कोई' और–
ठाक
आऽऽऽऽऽ
उस रहस्यमयी लड़की द्वारा फेंका गया पत्थर किसी गोली की भांति लगा था जेलर को–
कौन हो तुम?
अब कोई खतरा नहीं विलेन! जल्दी मेरे साथ आओ!

यह समय व्यर्थ के सवाल - जवाब करने का नहीं है विलेन ! फिलहाल हमारा किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचना जरूरी है।
सचमुच इस समय उस रहस्यमय लड़की की बात मान लेना ही श्रेयस्कर लगा विलेन को।
कौन है यह लड़की और मेरा नाम कैसे जानती है यह?
इधर सस्पेंस की भूल-भुलैया में भटक रहा था विलेन। उधर समूचा राजनगर पुलिस तंत्र हरकत में आ चुका था।
हु...ऊ...ऊ...
राजनगर की नाकेबंदी कर लो।
हु...ऊ...ऊ
चीख पड़े दूरसंचार के यंत्र-
एक मुख्य सूचना, आज रात विलेन राजनगर सेंट्रल जेल में दो संतरियों का खून करके फरार हो गया। सरकार ने उस पर दो लाख का इनाम रखा है। उसे जिंदा या मुर्दा पकड़वाने वाले को दो लाख रुपये का इनाम दिया जाएगा।
हा...हा...हा... ये लल्लू पुलिसिए अब विलेन को क्या ढूंढ पाएंगे भला...
...वह तो आजाद पंछी है। उड़ गया होगा कहीं।
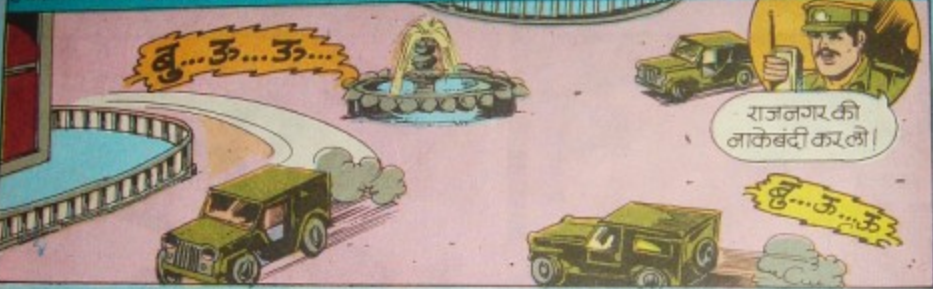
यह विलेन ने अच्छा नहीं किया राम। काश ! उसने थोड़ा सा सब्र किया होता।
हमें फौरन कूकासिंह के घर चलना होगा।
काश ! यह वो कूकासिंह न हो जो गांव से भागा था।
सच तो यही था कि कूकासिंह गांव से भागकर राजनगर आ गया था और अवैध धंधे करते हुए करोड़पति ही नहीं राजनगर का विधायक भी बन बैठा था।
अच्छी-खासी सैनिक छावनी में तब्दील हो चुकी थी राजनगर के विधायक कूकासिंह की कोठी।
मेरा ब्लडप्रेशर बढ़ता जा रहा है डॉक्टर। तुम कुछ करते क्यों नहीं।
आप खामख्वाह घबरा रहे हैं सर। आपका ब्लडप्रेशर बिल्कुल नॉर्मल है।

हम विलेन को पकड़ने की पूरी कोशिश कर रहे हैं सर। हमने इस कोठी के चारों ओर पर्याप्त सुरक्षा बन्दोबस्त किए हैं। यहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।

आजकल के परिन्दे बड़े नकटे व चालाक हो गए हैं इंस्पेक्टर। वे हजार बाधाएं पार कर जहां-तहां पर मार लेते हैं।

तभी राम-रहीम ने वहां प्रवेश किया।

आप ठीक कहते हैं सर। ठीक उसी तरह जैसे बरसों पहले डाकू चन्दा ने आपकी हवेली को आग की लपटों में झोंक दिया था।

तुम... तुम यह सब कैसे जानते हो?

कूकासिंह से मिलकर राम-रहीम सीधे जेलर के पास पहुंचे।
विलेन को मैं दोबारा पकड़ ही लेता, यदि वह रहस्यमय लड़की बीच में न आ गई होती।
बस नई जानकारी ने राम को चौंकाकर रख दिया।
कौन थी वो लड़की... और अचानक विलेन की मदद को कैसे पहुंच गई?
राजनगर से कहीं दूर-
मेरा नाम रक्षा है विलेन... और मैं कूका सिंह को मारने में तुम्हारी मदद करूंगी। बदले में तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।
कैसा काम?
यह जानना तुम्हारे लिए आवश्यक नहीं है विलेन। बोलो, कब करना चाहते हो तुम कूका की हत्या?
कल रात!
ठीक है। कल रात तुम बेरोक-टोक कूकासिंह की कोठी में प्रवेश कर सकते हो।

चौंक पड़े डॉ. भट्टाचार्य सामने खड़ी उस रहस्यमय लड़की को देख -

आज कूकासिंह के घर तुम्हारे साथ नर्स नहीं, मैं आऊंगी डॉ. भट्टाचार्य।

कौन हो तुम बदतमीज लड़की?

बदतमीज कहा है, तो अब मेरी बदतमीज़ी भी देख लो।

एक पल के लिए डॉ. भट्टाचार्य को अपना सम्पूर्ण जिस्म सैकड़ों प्रकाश पुंजों में घुमा महसूस हुआ था।

अगले क्षण -

आज कूकासिंह की कोठी पर तुम मेरे साथ चलोगी रक्षा।

हा... हा... हा... मेरी शक्तिशाली हिप्नोटिज्म पॉवर का भला क्या मुकाबला करेगा यह डॉक्टर!

सुबह से शाम तक पूरा दिन कूकासिंह की कोठी में नर्स के रूप में बड़ी आसानी से गुजारा रक्षा ने।

हालांकि कोठी पर तैनात इं. पाण्डे ने डॉ. भट्टाचार्य से इस नई नर्स के बारे में पूछताछ की थी। किन्तु रक्षा के सम्मोहन में बंधे डॉ. भट्टाचार्य ने उसे अपने उत्तर से सन्तुष्ट कर दिया था।

धीरे-धीरे श्वास मिटने लगी। यही वो क्षण था, अब गड़बड़ हो गई।

अपनी चन्द सांसें और ले ले कुत्ते। बहुत जल्द तुझे मौत देने आ रहा है विलेन।

अरे...! यह नर्स क्या कर रही है!

चीते की भांति फोन पर झपटा इं. पाण्डे–

हैलो राम...हां मैं इं. पाण्डे! फौरन यहां पहुंचो! कुछ गड़बड़... आह...!

हैलो... हैलो...

रिसीवर पर गूंजती रह गई राम की आवाज–

अब मुझे जल्द से जल्द कोठी में तैनात सभी सुरक्षा गार्ड्स को हिप्नोटिज्म पॉवर से अपने वश में करना होगा।

ठीक पांच मिनट बाद विलेन ने कोठी में प्रवेश किया। रक्षा के सम्मोहन में बंधे सभी सुरक्षा गार्ड्स पहले ही मानो स्टेच्यू में तबदील हो चुके थे।

मेरा काम खत्म हुआ विलेन। अब कुकासिंह की मौत के बाद ही हमारी मुलाकात होगी।
तभी-
ठहर जा विलेन... कुकासिंह कानून का मुजरिम है। उसे सिर्फ कानून सजा देगा।
क्या तू भूल गया राम कि विलेन अपना कानून खुद बनाता है। मुजरिमों की सजा खुद तय करता है।
यह समय राम से उलझने का नहीं है विलेन। तुम कुकासिंह को लेकर भागो। मैं राम को रोकती हूं।
रक्षा की बात पर अमल किया विलेन ने।
अगले क्षण वह साक्षात रहस्य की प्रतिमूर्ति राम के सामने थी।
अब विलेन के हाथों कुकासिंह को मरने से कोई नहीं रोक सकता राम।
ओह! तो यह है वो विलेन की अज्ञात मददगार।

तुम्हारा नाम बाद में पूछूंगा लड़की। पहले एक इश्ति-हारी मुजरिम की सहायता करने के जुर्म में तुझे गिरफ्तार करता हूं मैं।

हा...हा...हा... पहले इन सशस्त्र गार्ड्स से तो निपट ले राम।

यह रक्षा की जबरदस्त हिप्नोटिज्म पॉवर का ही कमाल था कि कृपालसिंह की रक्षा में तैनात गार्ड्स राम से ही उलझ बैठे।

अजीब मुसीबत में फंस गया हूं मैं। न इन निर्दोष गार्ड्स को मार सकता हूं और न ही इनसे पीछा छुड़ाए बिना विलेन तक पहुंच सकता हूं।

इधर राजनगर से दूर इस खण्डहर में-
आज चन्दामामा व गंगा मां की मौत का बदला तुझसे लेकर रहूंगा कूका।
नहीं विलेन... यदि तुमने मुझे मार डाला तो टि्वंकल तुम्हें कभी नहीं मिल पाएगी।
किसी परमाणु बम सा विस्फोट हुआ विलेन के मस्तिष्क में-
ट...टि्वंकल जिन्दा है!
तीर सही निशाने पर लगा देख बला की मुस्कान थिरक उठी कूका के होंठों पर-
हां विलेन... लेकिन मैं जीते जी तुम्हें टि्वंकल का पता नहीं बताऊंगा। और तुम टि्वंकल तक पहुंचने के लिए मुझे मार नहीं सकते। क्योंकि मेरे मरते ही तुम हमेशा के लिए टि्वंकल को खो बैठोगे।
२४

अजीब पशोपेश में पड़ गया विलेन-
मुझे इस समय टिंवकल की सलामती के लिए कूका को छोड़ना होगा। वरना टिंवकल को कभी नहीं पा सकूंगा मैं।
होंठों पर मुस्कान लिए खण्डहर के द्वार की तरफ बढ़ा कूका। तभी-
ठहर जा कूका!
अगले क्षण सूखे पत्ते सा हवा में उड़ता विलेन के कदमों में आ गिरा वह।
वह झूठ बोल रहा है विलेन। टिंवकल का पता सिर्फ मैं जानती हूं। और मेरा मकसद भी टिंवकल के प्राणों के साथ जुड़ा हुआ है।
???
हां विलेन... टिंवकल उर्फ राजकुमारी आंचल के प्राण खतरे में हैं। कल का सूर्यास्त होते ही टिंवकल की जीवन ज्योति बुझ जाएगी। क्योंकि कल उनकी आयु पूरी होने वाली है...
25

...लेकिन ट्विंकल उर्फ राजकुमारी आंचल के प्राण बच सकते हैं। यदि राम को कल सूर्यास्त से पहले-पहले किसी भी तरह सनसिटी ले जाया जा सके। और मैं यहां तुम्हारी मदद से राम को ही लेने आई थी विलेन।
यह... यह क्या कह रही हो तुम?
यह सच है विलेन। सनसिटी पहुंचते ही राम को मारकर उसकी आयु ट्विंकल को दे दी जाएगी।
रक्षा...! राम की तरफ उठने वाला हर हाथ काटकर रख दूंगा मैं।
छलक आए रक्षा की हिरणी जैसी आंखों से मोती जैसे आंसू-
मैं जानती हूं विलेन। तुम राम से कितना प्यार करते हो। किन्तु, राम का जन्म विशेष ग्रह नक्षत्रों में होने के साथ-साथ वह ट्विंकल का कर्जदार भी है। और उसे अपने प्राण देकर ट्विंकल का कर्ज चुकाना होगा।
ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें उस जगह का पता बता रही हूं, जहां से तुम राम को लेकर सनसिटी पहुंचोगे।
न जाने क्या-क्या कहती रही रक्षा और पगलाया सा विलेन बस सुनता रहा... सुनता रहा।

इधर राम सुरक्षा गार्ड्स से बुरी तरह उलझा हुआ था।

उफ! मेरा शरीर हर पल शिथिल पड़ता जा रहा है। अब इतना शक्तिशाली सम्मोहन तभी टूट सकता है, जब या तो वह लड़की स्वयं इन्हें पूर्व स्थिति में ले आए या फिर उसकी मौत ही आए।

राम, यह हैण्डग्रेनेड।

कुछ क्षणों के लिए हड़बड़ा गए समस्त सुरक्षा गार्ड्स।

और यही कुछ क्षण राम-रहीम के वहां से भाग निकलने के लिए काफी थे।
हमें फौरन उस खण्डहर में पहुंचना होगा। जहां विलेन कूकासिंह को ले गया होगा।

इधर रक्षा से मुखातिब विलेन कुछ पलों के लिए कूकासिंह की तरफ से असावधान हो गया था। नतीजा-
हा...हा...हा... अब बोल विलेन! पहले तू मरेगा या यह लड़की।

खांस उठा रिवॉल्वर-
किन्तु विलेन की ढाल बन गई रक्षा।
धांय
आऽsss
रक्षा...!
कूका को अपने सम्मोहन में जकड़ लेने का अवसर भी कहां मिल पाया रक्षा को।

पगलाया सा विलेन कूका के जिस्म में भरता चला गया बारूद।
धांय
धांय
धांय
धांय

रिवॉल्वर की सारी गोलियां कुका के जिस्म में उतारकर रक्षा की तरफ पलटा विलेन–
रक्षा... आंखें खोल रक्षा!
कंपकंपाए गुलाब की पंखुड़ियों से होंठ–
इन आंखों को अब सदा के लिए बंद ही जाने दे विलेन। किन्तु वादा कर विलेन, मेरा मकसद अब तू पूरा करेगा।
मैं वादा करता हूं रक्षा। मैं राम को लेकर सनसिटी जाऊंगा। मैं टिंकल को मरने नहीं दूंगा। नहीं मरने दूंगा मैं अपनी चन्दामामा की पहेली को। तू सुन रही है ना रक्षा?
किन्तु विलेन की बात सुनने के लिए जीवित कहां थी रक्षा।
पगलाया सा आसमान में चमकते चन्दामामा को निहारता रह गया विलेन–
आप मुस्करा रहे हैं चन्दामामा। बड़े निर्दयी हैं आप। खुद तो भगवान के पास चले गए। और अपने बच्चे को एक अजीब धर्मसंकट में डाल गए।
तभी बिजली की भांति वहां प्रवेश किया राम ने–
अपने आपको मेरे हवाले कर दो विलेन।

बड़ी फुर्ती के साथ विलेन का प्रहार बचाया राम ने-
अच्छा हुआ राम, तू खुद आ गया। वरना मुझे तेरे घर आना पड़ता। अब तुझे लेकर सनसिटी पहुंचूंगा मैं।
दो शेर जैसे एक दूसरे पर टूट पड़े थे।
विलेन की असली ताकत इसके स्केट शूज़ हैं। और मुझे सीधा इसकी ताकत पर प्रहार करना होगा।
रहीम के फेंके उस अनोखे शिकंजे में उलझकर रह गए विलेन के पैर-
एक पल के लिए लड़खड़ाया वह।

इसे घर ले चलो रहीम! मुझे इससे सनसिटी का रहस्य मालूम करना है।

ओ.के. राम!
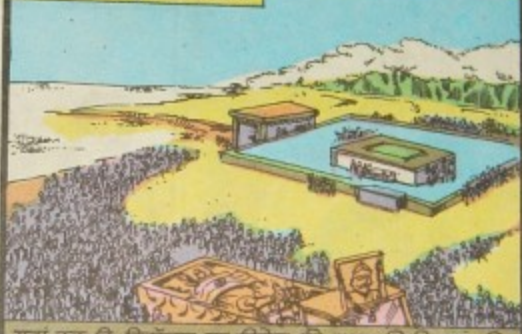
नहीं... यह तिरंगा इस हत्यारे का कफन नहीं बनेगा... नहीं बनेगा यह तिरंगा कफन।
कुक्कासिंह की लाश पर से बिजली की गति से झपटा राय ने वह तिरंगा।
यह तिरंगा उन संतरियों का कफन बनेगा, जो कानून की रक्षा के लिए विलेन की गोली का शिकार बन गए।
हाँ... उन संतरियों का कफन बनेगा यह तिरंगा।
हर कोई भौंचक्का सा स्टेचू में तब्दील राय की इस अप्रत्याशित हरकत को देखता रह गया।
राय तिरंगे से ढकी दोनों संतरियों की लाशों को अंतिम सलामी दे रहा था। आंखों में तैर रहे थे खून भरे आंसू।
समाप्त